

ओलवि रडिले कछुओं का सामूहिक नीडन

भारत के ओडिशा राज्य में रुशकुिल्या समुद्र तट पर हाल ही में पछिले कुछ दशकों में [ओलवि रडिले समुद्री कछुओं](#) का सबसे बड़ा समूह देखा गया है ।

- लाखों छोटे कछुओं को अंडों से निकलकर समुद्री मार्गों से होते हुए बंगाल की खाड़ी की ओर जाते देखा गया है ।

महत्त्व:

- **रुशकुिल्या समुद्र तट एक वन्यजीव अभयारण्य नहीं है** फरि भी कछुए सामूहिक नीडन (नेस्टिंग) हेतु यहाँ सुरक्षति महसूस करते हैं ।
 - सामूहिक नीडन और हैचिंग (अंडों से बच्चों का बाहर निकलना) एक **स्वस्थ समुद्री पारस्थितिकी तंत्र** तथा अंडे देने हेतु समुद्री कछुओं के लिये अनुकूल वातावरण का संकेतक है ।
 - अनेकों ओलवि रडिले कछुओं की सफल हैचिंग उनके **संरक्षण की दृष्टि से एक सकारात्मक संकेत है** ।

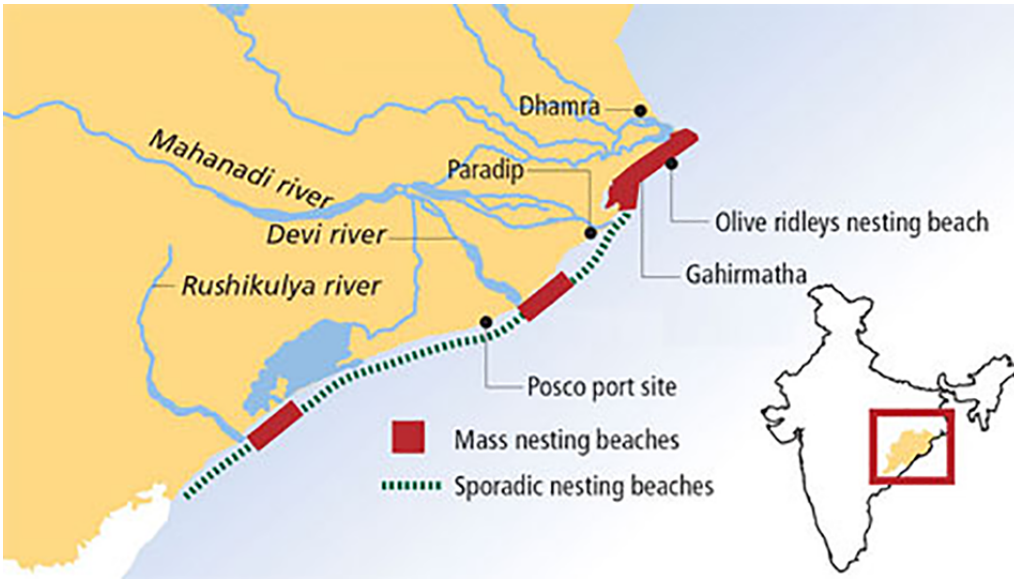
ओलवि रडिले कछुए:

- **वषिय:**
- ओलवि रडिले कछुए वषिव भर में पाए जाने वाले सभी **समुद्री कछुओं में सबसे छोटे और प्रचुर संख्या में मौजूद हैं** ।
- ये कछुए **मांसाहारी** होते हैं और इनका नाम इनके बाह्य आवरण के ओलवि यानी जेतून रंग के होने से प्रेरति है ।
- ये कछुए अपने अद्वितीय सामूहिक नीडन (Mass Nesting) अरीबदा (Arribada) के लिये सबसे ज़्यादा जाने जाते हैं जिसमें हजारों मादाएँ अंडे देने के लिये एक ही समुद्र तट पर एक साथ आती हैं ।



पर्यावास:

- ये मुख्य रूप से **प्रशांत, अटलांटिक और हदि महासागरों के गर्म जल** में पाए जाते हैं ।
- ओडिशा के [गहरिमाथा समुद्री अभयारण्य](#) को वषिव में समुद्री कछुओं की सबसे बड़ी रुकरी (प्रजनन करने वाले जीवों की एक कॉलोनी) के रूप में जाना जाता है ।



■ संरक्षण की स्थिति:

- [वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972](#): अनुसूची- 1
- [आईयूसीएन रेड लिस्ट](#): सुभेद्य (Vulnerable)
- [CITES](#): परशिष्टि- I

■ ओलवि रडिले कछुओं के संरक्षण हेतु पहल:

◦ ऑपरेशन ओलविया:

- प्रतर्विष आयोजित किये जाने वाले **भारतीय तटरक्षक बल** का "[ऑपरेशन ओलविया](#)" 1980 के दशक के आरंभ में शुरू हुआ था, यह **ओलवि रडिले कछुओं की रक्षा करने में मदद करता है** क्योंकि वे नवंबर से दिसंबर तक प्रजनन (Breeding) और नीडन (Nesting) के लिये ओडिशा के तट पर एकत्र होते हैं।

- यह अवैध ट्रैपिंग गतिविधियों को भी रोकता है।

◦ टर्टल एक्सक्लूडर डेवाइसेस (TED) का अनविर्य उपयोग:

- भारत में इनकी आकस्मिक मौत की घटनाओं को रोकने हेतु **ओडिशा सरकार ने ट्रॉल के लिये टर्टल एक्सक्लूडर डेवाइसेस (Turtle Excluder Devices- TED) का उपयोग अनविर्य कर दिया है**, जालों को वशिष रूप से निकास कवर के साथ बनाया गया है जो जाल में फँसने के दौरान कछुओं को उससे निकलने में सहायता करता है।

◦ टैगिंग:

- प्रजातियों और उनके आवासों की रक्षा के लिये वैज्ञानिक गैर-संक्षारक धातु टैग के साथ **लुप्तप्राय ओलवि रडिले कछुओं को टैग करते हैं**। यह उन्हें कछुओं की गतिविधियों को ट्रैक करने एवं उन स्थानों की पहचान करने में मदद करता है जहाँ वे अक्सर जाते हैं।

नोट:

- वर्ष 2006 में स्थापित [बहलर कछुआ संरक्षण पुरस्कार](#) स्वच्छ जल के कछुओं और अन्य कछुओं के संरक्षण के क्षेत्र में किये गए उत्कृष्ट कार्यों को सम्मानित करने हेतु दिया जाने वाला प्रमुख वार्षिक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है। इसे कछुआ संरक्षण का "[नोबेल पुरस्कार](#)" माना जाता है।
- इसे प्रत्येक वर्ष **टर्टल सर्वाइवल एलायंस (TSA), IUCN कच्छप और मीठे पानी के कछुआ विशेषज्ञ समूह (Tortoise and Freshwater Turtle Specialist Group- TFTSG), कछुआ संरक्षण तथा कछुआ संरक्षण कोष** द्वारा प्रदान किया जाता है।

ओलवि रडिले कछुओं के समक्ष खतरे:

- **मानवीय गतिविधियाँ:** तटीय विकास, मत्स्यन और प्रदूषण के साथ-साथ उनके आवास स्थलों का वनाश तथा मत्स्यन के दौरान जाल में फँसना।

- **हसिक पशु:** इन कछुओं के अंडों या छोटे कछुओं को कुत्ते, लकड़बग्घा और शिकारी पक्षियों द्वारा शिकार किये जाने का खतरा बना रहता है।
- **जलवायु परिवर्तन:** तापमान और समुद्र स्तर में वृद्धि के कारण कछुओं के आवास को काफी नुकसान पहुँचता है और हैचिंग में परेशानी होती है।
- **प्रकाश प्रदूषण:** आस-पास के कस्बों और औद्योगिक क्षेत्रों से आने वाली कृत्रिम रोशनी अंडे से निकले नवजात कछुओं (Hatchlings) को उनके मार्ग से वचिलति कर सकती है जिस कारण कछुओं को समुद्र से दूर जाना पड़ सकता है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न:

प्रश्न. नमिनलखिति में से कौन-सा भारत का राष्ट्रिय जलीय जीव है? (2015)

- (a) खारे पानी के मगरमच्छ
- (b) ओलवि रडिले कछुए
- (c) गंगा डॉल्फनि
- (d) घड़ियाल

उत्तर: (c)

स्रोत: द हद्रि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/mass-nesting-of-olive-ridley-turtles>

